



दृश्य कथाओं का भारतीय कला में योगदान: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉक्टर वर्षा रानी

असिस्टेंट प्रोफेसर - विभागाध्यक्ष- चित्रकला

हर्ष विद्या मंदिर (पी.जी) कॉलेज रायसी हरिद्वार ,उत्तराखंड

मोबाइल-9719546744 | Varshahvm@gmail.com

सार

सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक तथा सामाजिक चेतना के संरक्षण और संवहन का एक सशक्त माध्यम रही हैं। प्रागैतिहासिक शैलचित्रों से लेकर अजंता, बाघ, सांची, एलोरा, राजस्थानी, मुगल, पहाड़ी तथा विविध लोक एवं जनजातीय कला परंपराओं तक दृश्य कथाओं ने भारतीय समाज के जीवन-मूल्यों, धार्मिक आस्थाओं, लोकविश्वासों, ऐतिहासिक घटनाओं तथा सांस्कृतिक विरासत को प्रभावी रूप से अभिव्यक्त किया है। दृश्य कथाएँ केवल सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं हैं, बल्कि ज्ञान, परंपरा एवं नैतिक मूल्यों के पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरण का भी महत्वपूर्ण साधन हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में भारतीय दृश्य कथाओं की अवधारणा, ऐतिहासिक विकास, कलात्मक स्वरूप तथा भारतीय कलाओं में उनके बहुआयामी योगदान का विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन में गुणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध पद्धति का उपयोग करते हुए ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक स्रोतों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि समकालीन डिजिटल युग में दृश्य कथाएँ एनिमेशन, ग्राफिक डिजाइन, डिजिटल चित्रण तथा अन्य दृश्य माध्यमों के माध्यम से नए आयाम प्राप्त कर भारतीय कला एवं संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन तथा वैश्विक प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। अतः दृश्य कथाएँ भारतीय सांस्कृतिक पहचान, कलात्मक निरंतरता तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति की हैं।

कूँजी शब्द: दृश्य कथाएँ, भारतीय कला, लोक कला, सांस्कृतिक विरासत, दृश्य संचार, ग्राफिक डिजाइन, एनिमेशन, डिजिटल कला, भारतीय परंपरा, कला इतिहास।

भूमिका-

हमारी समृद्ध भारतीय कला के इतिहास के बारे में जब हम बात करते हैं तब इसकी विस्तृतता इसी से पता चलती है कि हमारी सभ्यता कंधराओं के आदिमानव के द्वारा बनाए गए चित्रों से आज के डिजिटल तक अपने विचारों को दृश्य चित्रों के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत करते आ रहे हैं। हमारे अनुभव, हमारे सांस्कृतिक मूल्य, हमारे विचार इन सबको दृश्य अभिव्यक्तियों ने ही भारतीय मूल्यों को संरक्षित कर रखा है।

दृश्य चित्रों का तात्पर्य होता है। किसी घटना को क्रमबद्ध करना, ऐतिहासिक तथ्यों को दिखाना, धार्मिक प्रसंगों को भावा, अभिव्यक्ति देना और सामाजिक भावों व अनुभवों को शब्दों के बिना अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना रामायण। महाभारत, जातक कथाओं, पुराण लीलाएं, पंचतत्व तंत्र की कहानियां बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म से

संबंधित चित्रों को कुशलता से चित्रित करके अत्यंत प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करना अजंता पाक के गुफा चित्रों, सांची और अमरावती के स्तूप, फड़, चित्र पटचित्र, मुगल शैली, राजस्थानी शैली, पहाड़ी, लघु चित्रकला, मधुबनी आदि चित्रों द्वारा धरोहर को संरक्षित करना। ये परंपराएं हमारी भारतीय परंपराओं की समृद्धता को संसार के सम्मुख उत्कृष्ट रूप में प्रस्तुत करते हैं तथा धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों को धरोहर के रूप में आज भी संग्रहित किया हुए हैं। आज के युग में डिजिटल क्रांति, जिसमें एनिमेशन, ग्राफिक डिजाइन, विभिन्न संग्रहालयों में लगी प्रदर्शनियां, और सबसे ऊपर आज का सोशल मीडिया जो भारतीय कला को ऊंचाइयां प्रदान कर रहा है जिससे दृश्य कथाओं की एक ऐतिहासिक यात्रा परंपरा भावाभिव्यक्ति, सांस्कृतिक मूल्य और सामाजिक योगदान ने पूरे विश्व में एक जगह बना ली है।

हमारी बाहर भारतीय कला का प्राचीन इतिहास, अपनी समृद्ध परंपरा और दृश्यकथाओं की एक सुसमृद्ध परंपरा है। हम देखते हैं कि अधिकांश शोध परिचर्चा, लेख और खोजों में सब चित्र, कला और मूर्तिकला, वास्तुकला या अधिक से अधिक लोक कला तक ही सीमित रहे हैं, लेकिन हम देखते हैं कि दृश्य कथाओं की चर्चा विस्तार, सांस्कृतिक संरक्षण, सामाजिक चेतना के निर्माण में और डिजिटल युग में भी। अन्य की अपेक्षा इनके ऊपर कम शोध हुआ है। आज के वैश्विक युग में डिजिटल युग और एआई के इस अत्यंत तेजी से पकड़ वाले युग में दृश्य संचार के स्वरूप में भी बहुत परिवर्तन आया है। ऐसे में यह भी जानना आवश्यक हो जाता है कि भारतीय दृश्य कथाओं की परंपरा शैली आज के एआई या आधुनिक संचार में किस प्रकार संरक्षित है। या वह पुनर्जीवित हो रही है इसी आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही दृश्य कथाओं के ऐतिहासिक विकास और सांस्कृतिक समकालीन और प्रासंगिकता का सही विश्लेषण भी प्रस्तुत करता है।

भारतीय दृश्य कथाओं का कला की दृष्टि से विश्लेषण करना प्रमुख भारतीय दृश्यकर्ताओं के दृश्य विश्लेषण के साथ उनकी विशेषताओं की भी वेचना करना है। दृश्य कथाओं का भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान है और सही प्रकार से मूल्यांकन इन्हीं के द्वारा किया गया है। भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में, जो दृश्य कथाओं का एक सशक्त योगदान है उसका सही विश्लेषण भी इन्हीं के आधार पर किया गया है। भारतीय दृश्यकथाओं का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में जो प्रमुख योगदान है उसका पूर्ण एवं विकसित अध्ययन करना भी बहुत आवश्यक है।

हमारी भारतीय कला संस्कृति में दृश्यताओं की अवधारणा क्या है किन किन चरणों में और किस किस युग में किस शैली में भारतीय दृश्य कथाओं का किस प्रकार विकास हुआ हमारी दृश्य कथाओं का भारतीय स्वरूप क्या है? क्या दृश्य कथाएं भारतीय संस्कृति के अनमोल प्रसंगों को संग्रहित करने में सहायक रही है? आज के एआई और डिजिटल युग में किन चुनौतियों का सामना करके? दृश्य कथाएं अपने संभावनाएं तलाश रही हैं।

भारतीय कला में दृश्यकथाओं का ऐतिहासिक विकास किस प्रकार हुआ- सबसे पहले प्रागैतिहासिक शैलचित्रों से कला का आरंभ माना जाता है। भीमबेटका, लखनिया दरी आदि के शैलाश्रों में प्राप्त चित्र मानव जीवन, उनके शिकार नृत्य, उनके पशु और उनकी सामूहिक गतिविधियों का सचिव चित्रण करते हैं। हालांकि ये चित्र मनुष्य की लिखित भाषा से पूर्व के हैं, लेकिन फिर भी मानव जीवन की घटनाओं का दृश्य रूप में सजीव वर्णन मिलता है। सिंधु घाटी की टेरा-कोट्टा कोटा की मूर्तियां हो, यह वहाँ की मोहरें, अलंकरण हो या प्रतीकात्मक दृश्य कथाएं। इन सभी का प्रारंभिक रूप हमें देखने को मिलता है, बैल, हाथी, गैंडा नृत्य करते स्त्री उस समय के धार्मिक और सामाजिक मान्यताओं को प्रस्तुत करते हैं।

भारतीय दृश्यकथाओं के जब हम विकास क्रम की बात करते हैं तब बौद्ध धर्म का इसमें सबसे बड़ा योगदान है। सांची, भरहूत और अमरावती के इस स्तूपों पर बूथ के जीवन और उनकी जन्म जन्मांतर की जातक कथाओं के सिद्धांतों का हमें सबसे उत्कृष्ट दृश्य यहीं पर मिलता है अजंता की गुफाओं में चित्रित भगवान बुद्ध की जातक कथाएं। सम्पूर्ण विश्व की सर्वश्रेष्ठ जातक कथाओं या दृश्य कथाओं में गिनी जाती है। इन चित्रों में जिन कलाकारों ने कथाओं के अनेक प्रसंगों को अद्भुत कलात्मक शैली के साथ संयोजित किया है, वह सम्पूर्ण विश्व में भारत देश को अग्रणी बनाता है। गुप्तकालीन बाघ, गुफाओं के भित्ति, चित्र और गुप्तकालीन मूर्तिकला में दृश्यकथाओं का अत्यंत ही परिष्कृत स्वरूप हमें देखने को मिलता है। मध्यकाल में भारतीय दृश्य कथाओं का विस्तार अलग अलग क्षेत्रों की चित्रशैलियों में हुआ जिसमें राजस्थानी चित्रकला में रामायण, महाभारत, रागमाला और कृष्ण भक्ति के विषयों को वहां के कलाकारों ने प्रमुखता से चित्रित किया इसी के साथ पहाड़ी चित्रकला में गीत, गोविंद भगवत, पुराण और कृष्ण लीला का अत्यंत ही भावपूर्ण चित्रण हमें वहां देखने को मिलता है। इसी के साथ मुगल चित्रकला में ऐतिहासिक घटनाएं दरबारी, जीवन और युद्ध के समय के सजीव चित्रण देखकर हम कला के विकसित स्वरूप को देखते हैं। बंगाल स्कूल के कलाकारों ने भारतीय सांस्कृतिक पहचान को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। स्वतंत्रता आंदोलन के समय में। दृश्यकथाओं ने राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में अहम भूमिका निभाई। अजंता के भित्ति चित्रों में कलाकार ने भावपूर्ण मानवीय अभिव्यक्तियों को व्यक्त किया संतुलित संरचना वहां के कलाकार ने की रंगों का मनोवैज्ञानिक प्रयोग भी हमें अजंता के चित्रों में देखने को मिलता है। धार्मिक और नैतिक संदेश देती, वहां की दृश्य कथाएं एक कथात्मक शैली के रूप में प्रस्तुत हुई हैं।

बिहार की मधुबनी चित्रकला वहां के लोक जीवन और धार्मिक कथाओं को अपनी सशक्त तूलिका से अभिव्यक्त करने में सक्षम है। उनके चित्रों में राम और सीता का विवाह, कृष्ण लीला देवी देवता, लोक पर्व और प्रकृति से संबंधित अनेक कथाओं का चित्रण हमें देखने को मिलता है। इस शैली में कला कलाकार ने चमकीले रंगों, सजावटी रेखांकन, प्रतीकात्मक रूपांकन। और लोक जीवन के चित्रों को बहुत ही सहज रूप में प्रस्तुत किया।

ओडिशा के पट चित्र, जिसमें भगवान जगन्नाथ और कृष्ण लीला दशावतार और पुराणों का अंकन बहुत ही सुंदरता से किया गया। इन चित्रों में सूक्ष्म रेखांकन, प्राकृतिक रंगों का और अलंकरण का एक अत्यंत ही संतुलित समायोजन हमें देखने को मिलता है।

कपड़ों पर रामायण, महाभारत और पुराणों के प्रसंगों को हस्तचित्रण द्वारा अंकित किया जाता है। तब हम कलमकारी कला को नमन कर सकते हैं। महाराष्ट्र की वर्ली चित्रकला, वहां के आदिवासी जीवन का पूरा खाका उतार देती है। उनके बहुत ही सहज और सरल ज्यामितीय आकार जिनके माध्यम से वे वहां की कृषि विभाग, नृत्य पर्व और प्रकृति का चित्रण बखूबी करते हैं, उनके चित्रों में दृश्य कथाएं लोग जीवन का जीवन प्रतिबिंब हम सभी के सम्मुख। प्रस्तुत करती हैं। डिजिटल युग में दृश्य कथाएं- इक्कीस वीं शताब्दी के सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने दृश्य कथाओं के स्वरूप को ही प्रसार में परिवर्तित कर दिया, जहां पारंपरिक दृश्य कथाएं भित्तियों पांडुलिपियों, वस्त्रों और लोक चित्रों में सीमित थी, वहीं आज डिजिटल माध्यमों से एनिमेशन ग्राफिका वे वर्चुअल और सोशल मीडिया के माध्यम से दर्शकों तक पहुंच रही है। आज की डिजिटल क्रांति ने भारतीय कला को नए आयाम दिए हैं और राष्ट्रीय संग्रहालयों, कला दीर्घाओं और सांस्कृतिक संस्थानों ने अपनी कलाकृतियों का डिजिटल ली करण



करके उन्हें प्रत्येक जन जन तक उपलब्ध कराया है। शोधार्थी, विद्यार्थियों और कला के प्रेमियों को अत्यंत दुर्लभ से दुर्लभ कलाकृतियाँ सरलता से प्राप्त हुई है।

एनिमेशन और डिजिटल के माध्यम से रामायण और महाभारत युवा पीढ़ी के हृदय तक पहुंची है। जातक कथाएं और पंचतन्त्र जैसी भारतीय कथाओं को नया रूप देकर इस नई पीढ़ी को भारतीय संस्कृति की धरोहर को विरासत के रूप में हस्तांतरित किया है।

निष्कर्ष

भारतीय कला में दृश्य कथाएं केवल चित्रों की अभिव्यक्ति मात्र नहीं है बल्कि वे हमारी भारतीय सभ्यता की सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक और ऐतिहासिक जीवन को जीवित अभिव्यक्ति देने का माध्यम है। प्रागैतिहासिक शैलचित्रों से लेकर आज के डिजिटल युग की दृश्य कथाओं ने भारतीय समाज के ज्ञान, परम्परा और जीवन मूल्यों को युवा पीढ़ी तक पहुंचाकर उन्हें प पीढ़ी दर पीढ़ी उन्हें युवाओं को सौंपकर सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज के एआई युग में दृश्य कथाओं का रूप हर दिन बदल रहा है एनिमेशन वर्चुअल संग्रहालय सोशल मीडिया ने भारतीय दृश्य परंपराओं के संरक्षण और वैश्विक स्तर तक नई संभावनाएं प्रस्तुत की है तथा सांस्कृतिक प्रामाणिकता, बौद्धिक संपदा और पारंपरिक कलाकारों के संरक्षण जैसी चुनौतियां भी इसके सामने आई हैं लेकिन फिर भी हम कह सकते हैं कि भारतीय कला में दृश्य कथाएं अपने अतीत और आज वर्तमान के मध्य एक सशक्त सांस्कृतिक पुल के समान हैं जिनका भविष्य में संरक्षण डिजिटल माध्यम से होकर संग्रहित हो रहा है।

संदर्भ सूची:-

- 1 वासुदेवशरण अग्रवाल – भारतीय कला
- 2 वासुदेवशरण अग्रवाल – भारतीय लोकधर्म
- 3 कपिला वात्स्यायन – भारतीय कला की परम्परा
- 4 निहार रंजन राय – भारतीय कला और संस्कृति
- 5 रामधारी सिंह 'दिनकर' – संस्कृति के चार अध्याय
- 6 सत्यकेतु विद्यालंकार – भारतीय संस्कृति का विकास
- 7 परिपूर्णानन्द वर्मा – भारतीय चित्रकला का इतिहास
- 8 राय कृष्णदास – भारतीय चित्रकला
- 9 मोतीचन्द्र – प्राचीन भारतीय वेशभूषा एवं कला
- 10 भगवतशरण उपाध्याय – भारतीय कला की भूमिका
- 11 कृष्णदेव – भारतीय मंदिर वास्तुकला
- 12 अनन्द कुमारस्वामी – भारतीय एवं इंडोनेशियाई कला (हिन्दी अनुवाद)